PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Punjab Kesari, Delhi
Fri, 02 Jun 2017, Page 9
Width: 27.08 cms, Height: 20.10 cms, a3r, Ref: 36.2017-06-02.61

देश में बढ़ गया है दूध का उत्पादन : राधा मोहन सिंह

- 2011-14 में किसानों की आमदनी 29 रुपए प्रति लीटर थी, जो 2014-17 में 33 रुपए प्रति लीटर हो गई जो कि 13.79 फीसदी की वृद्धि है...

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): पिछले तीन साल में देश में दूध के उत्पादन में जबदस्त उछाल आया है। 2011 में जहां 398 मिलियन टन दूध का उत्पादन हुआ था, वहीं 2014 से 17 में यह 456.5 मिलियन टन हो गया। इसमें 16.9 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। इसी तरह 2011-14 में किसानों की आमदनी 29 रुपए प्रति लीटर थी, जो 2014-17 में 33 रुपए प्रति लीटर हो गई जो कि 13.79 फीसदी की वृद्धि है।

यह जानकारी केंद्रीय कृषि व किसान मंत्री राधा मोहन सिंह ने दी। मंत्री पूसा इंस्टीट्यूट में विश्व दुग्ध दिवस पर आयोजित समारोह में बोल रहे थे। दूध उत्पादन में हम लगातार प्रगति कर रहे हैं लेकिन अभी भी मीलों का सफर तय करना है ताकि हम देश के हर बच्चे को दूध सहित पर्याप्त पोषण दे सकें।

देसी गोपशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए देशी नस्लों के विकास और संरक्षण हेतु आबंटन को कई गुना बढ़ाया गया है। देश में पहली बार 'राष्ट्रीय गौकुल मिशन' नामक एक नई पहल की गई। इसका उद्देश्य देसी बोवाइन नस्लों का संरक्षण व विकास करना है। इस मिशन के अंतर्गत मुख्यत: गोकुल ग्रामों की स्थापना करना, फील्ड परफॉरमेंस रिकॉर्डिंग करना, गोपालको एवं गौपालन से संबंधित संस्थानों को प्रति वर्ष सम्मानित करना, बुलमदर फर्म्स को सुदृढ़ करना, देसी नस्ल के उच्च अनुवांशिक गुणवता के सांड को वीर्य उत्पादन केन्द्रों में अधिक संख्या में शामिल करना इत्यादि है। देशी नस्लों का समग्र और वैज्ञानिक रूप से विकसित तथा संरक्षित करने के लिए उत्कृष्टता केंद्र के रूप में कार्य करने के लिए 'राष्ट्रीय कामधेनु प्रजनन केंद्रों' की स्थापना की जा रही है। राष्ट्रीय कामधेनु प्रजनन केंद्र देशी जर्मप्लाज्म का भण्डार होने के अलावा देश में प्रमाणित जेनेटिक्स के स्रोत भी होंगे। मध्य प्रदेश व आंध्र प्रदेश दोनों राज्यों को क्रमश: उत्तरी और दक्षिणी क्षेत्रों में एक-एक राष्ट्रीय कामधेनु प्रजनन केंद्र की स्थापना हेतु 25-25 करोड़ रुपए की राशि जारी की गई है। आंध्र का केंद्र लगभग तैयार है।

खुशखबरी

- 2011 में 398 मिलियन टन उत्पादन हुआ था, 2014-17 में 456.5 मिलियन टन हो गया

'ए-2 दूध को अलग से बेचने की जरूरत'

कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह बताया कि देसी नस्लों के बारे में बताया कि उष्मा-साध्य तथा रोग प्रतिरोधी होने के अलावा गायों की देशी नस्लें ए 2 टाइप का दूध उत्पादित करने के लिए जानी जाती हैं जो विभिन्न पुरानी स्वास्थ्य समस्याओं, जैसे हृदय व रक्त वाहिकाओं संबंधी मधुमेह और स्नायु संबंधी विकारों से बचाने के अलावा कई अन्य स्वास्थ्य संबंधी लाभ प्रदान करता है। उन्होंने कहा देश में ए 2 दूध को अलग से बेचे जाने की आवश्यकता है। कृषि मंत्री ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री का उद्देश्य किसानों की आय को 2022 तक दोगुना करना है। इस प्रक्रिया में डेयरी क्षेत्र एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। इस अवसर पर गौपालकों को राष्ट्रीय गोपाल रत्न और कामधेनू एवार्ड 2917 पुरस्कार भी प्रदान किया। ये दोनों पुरस्कार वर्ष 2017 से शुरू किए गए हैं।